'विदेह' २६४ म अंक १५ दिसम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३२ अंक २६४)

ऐ अंकमे अछि:-

गीतांजलि झारु

(रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार')

गीतांजलि झारू

झा रू ए व म् गी त सं ग्र ह



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

पल्लवी प्रकाशन

गीतांजलि झारू

रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-61-2

दाम : 200/- (भा. रू.)

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

GATANJALI JHAROO
Collection of Geet and Jharoo by Sh. Ramdeo Prasad Mandal 'Jharoodar'

अनुक्रम

1.

झारू-
जीयो और जीने दो मन्तर
जँ जपतै ई जग संसार।।
जग अमनकेँ जड़ि जुएतै
हरिएतै मानव अधिकार।।
गीत-
जीयो और जीने दो मन्तर
राखू हरदम याद यौ।-2
किए केकरोसँ झगड़ा हेतै
हेतै किए विवाद यौ।-2
किए...।

आसमान छी सबहक पिता
भू मण्डल छी सबहक माता।-2
तँए भैयारी सभ जग वासी
मनमे करू सुआद यौ।-2
किए...।

बढ़बू जन-जनमे सभ प्रीत
हेतै मानवता केर जीत।-2

एक बनि जीबै सभ जग वासी
घर-घर दियौ समाद यौ।-2
किए...।

दियौ जग अमनपर जोर
चलू विश्व शान्ति केर ओर।-2
केकरो नै कियो करै गुलामी
सभ जीबतै अजाद यौ।
किए...।
❑

2.

झारू-
मान नै केकर मन मानै छै
केकर मन मानै अपमान।।
अपनाबू सभ जीव जगतकेँ
पूरत अहूँकेँ ई अरमान।।
गीत-
शिक्षाक बौछार लागल छै
घर-घर पढ़ाइ-लिखाइ छै।-2
बड़ी सरम केर बात आबो
लोकसँ लोक छुबाइ छै।।-2

केकर लहु केकरासँ कम छै
सभ लहुमे एके दम छै।-2
श्रद्धा और सिनेहमे सबहक
बड़बैर हक देखाइ छै।।-2
बड़ी...।

जेकरा नै जीवनक आधार
की बुझतै मानव अधिकार।-2
ऊँच नीचक हथियार उठा कऽ
जगसँ लड़ै लड़ाइ छै।।-2
बड़ी...।

मानवताक शासन मानू
सभ मानवकेँ बड़बैर जानु।-2
जीबैक हक छै सभकेँ बड़बैर
अन्धोकेँ ई देखाइ छै।-2
बड़ी...।
❑

3.

झारू-

कािल्हकैं के देखलकै बाबू

कािल्हक करिश्मा बड़ा महान।।

कािल्ह हाथमे हेतै खप्पर

आ की करब अहाँ कंचन दान।।

गीत-

आब की कड़ी हम

सामने खड़ा सवाल छै।-2

जीनगी भेल दबाल छै ना।।-2

जँ फँसि जाइ छै ई मशला

की करबै होइ नै फैसला।-2

ऐ सँ वंचित नै कियो

राजा रंक कंगाल छै।

जी...।

भेटल समयसँ नै जवाब

कल्लर बनि जाइ छै नबाब।-2

या खोजि गलत हल

जीनगी करै हलाल छै।

जी... ।

हल लालच केलक सवाल
जिनगी फँसि गेल ओझड़ी जाल ।-2
आब के छोड़तै
केकरो कहाँ मजाल छै ।-2
जी... ।

उत्तर समय चाहै छै कम
जीयब या की घेरत जम
रक्षा करू विधाता
मौत जिनगी के सवाल छै ।
जी... ।

खोजै समय रहैत सच उत्तर
बिरला छै जगमे ई पुत्तर ।
दुख से पाबै,
जिनगी तेकर बबाल छै ।
जी... ।
❑

4.

झारू-

जागू बाबू देश बँचाबू
लबका खुनक बोलीसँ।।
जे मानवमे फुट कराबै
तेकरा मारू गोलीसँ।।

गीत-

आधा रोटी खेबै यौ
देशकेँ बँचेबै यौ।-2
ज्ञान-विज्ञानक डोर पकैड़ हम
दुनियाँकेँ नचेबै यौ।-2

देशमे पसरल भ्रष्टाचारी
गमन घोटाला अत्याचारी।-2
एकता के तलवार बना हम
सबहक घेँट कटेबै यौ।-2
आधा...।

सत् अहिंसा गाँधीसँ लेबै
हिंसाकेँ नै बढ़ए देबै।-2
सुख शान्तिक महल बना हम

दुनियाँकेँ बसेबै यौ।-2
आधा...।

सेवाकेँ जन-जन बुनबै
मानवताक मन्तर गुनबै।-2
जग अमन केर माला लऽ कऽ
घर-घर धूम मचेबै यौ।-2
आधा...।
❑

5.

झारू-
झारू बिनु नहि घरक शोभा
झारू बिनु नहि होएत हवण।।
हमरा बिनु नहि मन्दिर-मश्जिद
आर ने देशक संसद भवन।।
गीत-
झारूसँ जुनि घृणा करू
ई तँ अनुचित बात छी। -2
जइसँ मिलै छै जगमे शान्ति
तेकर हम शुरूआत छी।। -2

जइ घर नहि छै हम्मर आदर
तइ घर घुसतै दुक्खक बादर। -2
पएर पसारत रोग बेमारी
ओघर भूतक जमात छी। -2
जइसँ मिलै...।

की हमरा बिनु तनक शोभा
फुटतै की मन ऐ बिनु आभा। - 2
के कहौत हमरा बिनु मानव
केकर ई औकात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

के नहि लइ छइ हमर सेवा
राजा रंक दानव आ देवा। -2
के गीन सकतै रूप-रंग हम्मर
सोचैवाली बात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

❑

6.

झारू-
रहि नै गेल आजुक शिक्षामे
ज्ञानकर्मक महान उदेस।
भ्रष्टाचारसँ धनार्जण कऽ
जड़ीया बँचि गेल बाँकी शेष।।
गीत-
शिक्षा भऽ नै जाउ बदनाम
गै बेटी भार तोरापर छौ- 2
भैया बाबूक ठोरक लालीकेँ
श्रृगार तोरापर छौ- 2

शिक्षासँ ले ज्ञान सुकर्मक
राख परख मानवता धर्मक। 2
निष्ठा नीति इमानक
मलार तोरापर छौ। 2
शिक्षा...।

शील शुशिलता गढ़ा-ले गहना
मानवता केर पहीरिले कंगना। -2
सिनेह प्यार सभ छोट पैघक

बेवहार तोरापर छौ। -2
शिक्षा...।

जगमे पसरल दहेज बेमारी
वैद्य बनै केर कर तैयारी।-2
कुष्ट समाजिक दहेजक
तलवार तोरापर छौ।– 2
शिक्षा...।
❑

7.

झारू-
भूल करै जँ वनक पंछी
पशु करै तँ औ छै बात।
ऐसँ वंचित जीव जगत केर
मात्र छोड़ि कऽ मानव जात।।
गीत-
दुइए फूलसँ घर सजाबू
सुखी रहत संसार यौ।-2
करू नियोजित सभ कियो बाबू
अपन-अपन परिवार यौ।-2

दू गोटे हम हमरा दूटा
लक्ष्मी बेटी आ भोलबा बेटा।-2
नीकसँ मिलतै शिक्षा दिक्षा
रोटी कपड़ा दुलार यौ।-2
करू नियोजित...।

कान धरू विज्ञानक हल्ला
भरल जोगार छै एकरा झोला।-2
नहि तँ होएत ककोड़बा वाणी
खोधि कऽ खाएत कपार यौ।-2
करू नियोजित...।

जनसंख्याँ केर बोझ भेल भारी
नाकोदम केलक बेकारी।-2
आबो नै चेतब नर नारी
फेल कऽ जाएत सरकार यौ।-2
करू नियोजित...।
❑

8.

झारू-

सुति उठि लागू भोरे बाबू

माए-बाबूकेँ गोड़ यौ। एकड़ा सन जगमे नै कियो

सेवापर दियौ जोर यौ। गीत- माए गइ बोल तोहर छौ, बाइबिल वेद कुरान गइ। शान्तिकेँ बरदान गइ ना-2 तूँ तँ जगमे अनुपम, केकर उपमा देबै हम। सौंसे दुनियाँमे नै, कियो तोरा समान गइ। शान्ति...।

आगू तूँ पाछू भगवान, जगमे तुहीं एक महान। तोरे नाओंसँ पुज्जित मन्दिरक भगवान गइ। शान्ति...।

तूँ तँ ममता केर अकास। पहिल गुरु केर प्रकाश। तुहीं जगमे देखेलही, जीबै केर सामान गइ। शान्ति...।

तूँ तँ अल्ला, ईषू, महेश, कार्तिक गणपति और गणेश। माए गइ चरण तोहर छौ, गंगामे स्नान गइ। शान्ति...।

❑

9.

झारू-
गरीब भूखल कम रहै छै
भूखल बेसी रहै धनवान।
गरीब भूख बस सुखल रोटी
अमीर भूखल हीराक खान।

गीत- तूमलोग केना कऽ जीबतै ओतए आपलोग
जतए बेमार छै। असंतोषमे माथ दुखाइ छै
स्वार्थक चढ़ल बोखार छै। अहाँ बाबू बनू
बरूआर हम छी सेवा-ले तैयार। मान-सम्मानमे
सभकेँ बरोबैर जीबैक अधिकार छै।
असंतोषमे......।
आप उरू मोटर गाड़ी साइकिल हमरो रहए
तैयारी। एक दोसरक घाट उतारनाइ दुनियाँक
बेवहार छै। असंतोषमे......।
अहाँ पाबू पुआ-खीर चुल्हा बुझै ने हमरो भीड़
इज्जतसँ दू वक्तक रोटी हमरो तँ दरकार छै।
असंतोषमे......।
अहाँ पहिरू सूट-सफारी फाटए हमरो ने पढ़िया
साड़ी
तन झाँपि कऽ हमहूँ जीबी हमरो तँ सरोकार छै।
असंतोषमे......।

अहाँ शोभा महल अटारी झोपड़ी हमरो रहै तैयारी। सीर छुपबैले छत होइ ऊपर हमरो तँ दरकार छै। असंतोषमे...।

❑

10.

झारू-

की करी अपनेक सेवा

घर खाली किछु छै नै धन।

बैसू बिछा दी अहाँ नीचाँ

श्रद्धा रंजीत अप्पन मन।।

सुआगत गान-

अर्पण करै छी चरण-कमलमे

करू सुआगत स्वीकार यौ।

हम अदना सन धुल घरा कऽ

अहाँ छी देव अवतार यौ।-2

दर्शन देलौं हमरा हुजुर

नाचि उठल मन मजूर।-2

मनसा पुरलैन हमर विधाता

सुनलैन हमर पुकार यौ।-2

हम अदना... ।

अहाँ चरणकेँ धुऐत धुल
मनमे समा रहल नै फूल ।-2
पावन भेल हमर घर-अँगना
हम भेलौं साकार यौ ।-2
हम अदना... ।

घर हमरा नै पकवान
सुखल रोटी छै नीदान ।-2
पाबि बिसारब देव अतिथि
हम छी गरीब अपार यौ ।-2
हम अदना... ।
❑

11.

झारू-
सफल करब जँ जिनगी बाबू
कसि पकड़ ई दू आधार ।
पहिला जानू सादा जिनगी
दोसर जानू उच्चविचार ।।
गीत-

चालि चली सादा निमहे बाप-दादा-2
कहि गेला बुढ़ पुरनियाँ अहीमे छै फायदा-2

देखती नै खाउ पीबू देखती नै पीनहुँ-2
रहू औकात धरि अपनाकेँ चिन्हुँ-2
जिनगी आनन्द हाएत हम करै छी वादा।-2
चालि चली...।

दोसरकेँ नीक देख किन्नौं नै जरू-2
अपनो आनन्द रहू दोसरो-ले मरू-2
ज्ञानी पुरुषक यएह छी कायदा।-2
चालि चली...।

फाटलकेँ लाज कोन मैले लजाबु।-2
झूठक वेपार छोड़ि सच गाल बजाबू।-2
बात करू कम-सम काम करू ज्यादा-2
चालि चली...।

परक उपकार करू, करू नहि निन्दा।-2
जीवितेमे मरू नहि मरि कऽ रहू जिन्दा।-2
जिनगी शीतल करू किनू नहि रौदा।-2
चालि चली...। ❑

12.

झारू-

देखव-देखव दुनियाँ केरि रीति
असगर दुख हम करब केतेक।
शिक्षा तँ असमान छुबैत अछि
पुरी पाताल धँसि गेल विवेक।।

गीत-

माए-बाप भऽ गेल नीम करैला
कनियाँ तँ वर मीठ छइ।-2
देखू यौ बाबू आबि गेल आगू
केहेन जमाना ढीठ छइ।-2

इलम छै नहि काम काजकेँ
बुझै नहि किछु लोक लाजकेँ।-2
जौं बुढ़िया बेवहार बुझबै
टुटै-ले ओकर पीठ छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

जबसँ गेलै दिल्ली दुल्हा
फेर नहि फुकलक घुरि ओ चुल्हा।-2
बुढ़ियासँ सभ हटल करबै

अपना धेने सीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

लक्सक खुशबू तन गमकै छै
साड़ी सीतारा सोन चमकै छइ।-2
फाटल-पुराणमे बुढ़िया जीबै
कनियाँ झाड़ै जीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।

हरदम ककही हाथ रहै छै
माथसँ आँवला तेल बहै छइ।-2
अलता-टिकुली-रीबन चोटी
ठोरक लिपीस्टिक हीट छइ।-2
देखू यौ बाबू...।
❑

13.

झारू-
बेवहारे पहिचान कराबै
बेकती और इंसान केर।-2
कियो देरवाबै रूप दानवी
केकरो गुण भगवान केर।-2
प्राती-
उठू जागू बेटोही भिनुसर भेल
छुपि गेल निशाँ आब जागू ने।
बहि रहल पवन अमृत धारा
निज तनमे एकरा लगाबू ने।।

आलस बिसतर खटिया छोड़
नित्त क्रियामे तनकेँ जोड़।-2
दिशा दतमैनक राखू याद
स्नान करू तेल मलला बाद।-2
मलि तन पोछू निज गमछासँ
कपड़ा कालादेशक पाबू ने।-2
उठू जागू...।

मन्ने-मन्न हरिक धियान धरू

माए-बाबूकेँ प्रणाम करू।-2
आशिष लिअ सत्त सेवा केर
बोलीमे बाँटू मेबा केर।-2
निजसँ जानू पर पीड़ाकेँ
दुखियाकेँ गला लगाबू ने।-2
उठू जागू...। ❑

14.

झारू-
साधुवाद हे देशक धरती
साधुवाद हे सभ जनता।
साधुवाद हे ताज देशक
साधुवाद हे सम्प्रभुता।।
गीत-
हमरा देशक धरती महान छै गइ बहिना।
तँए सोनासँ भरल भण्डार छै की ओहिना।।
केतौ लोहा केतौ ताम्बा भरल छइ।-2
केतौ चानी केतौ हीरा गड़ल छइ।-2
केतौ कोयलाक भण्डार छै गइ बहिना
तँए सोनासँ भरल भण्डार छै की ओहिना।-2

जेतए छै किमती आनि जानसँ।

झूकै नहि ई बस टुटै शानसँ।-2
राष्ट्र हित लऽ सेफ छै प्राण गइ बहिना
तँए सोनासँ भरल भण्डार छै की ओहिना।

सेवा केर जेतए परम्परा छइ।
सभ मानव लेने हाथ खड़ा छइ।-2
घर आएल मेहमान लगै भगवान गइ बहिना।
तँए सोनासँभरल भण्डार छै की ओहिना।-2
❑

15.

झारू-
साधुवाद मिथिला केर धरती
साधुवाद मैथिल जनता।
साधुवाद हे ताज मिथिला केर
साधुवाद सम्प्रभुता।।
गीत-
हमर वन्दना माँ मिथिलासँ
विनय करू स्वीकार हे।
बनि अनाड़ी जीबै छी जगमे
जिनगी भेल बेकार हे।।

राजाजनक छल अहीं गर्भ-के।-2
जन्म देलौं विद्यापति सर्व-के।-2
हमरा छुपेबै अहाँ कहिया तक
हमरो करू उद्धार हे।
बनि...।

नहि जानि अहाँ केतेकें तारलौं-2
अपना धुलसँ बहुत उबारलौं-2
कनियोँ धुल हमरो छीटि दइतौं
हमहूँ होइतौं साकार हे।
बनि...।
ज्ञान देलौं अहाँ सौंसे जगत-के।-2
करू दया कनी अहूँ भगत-पे।-2
पूजब हे तोरा कण-कण मैया
दियौ मौका एकबार हे।
बनि...।
❑

16.

झारू-
करू नइ तुलना पर बच्चासँ
भरू नइ ओकरा हीनता बात।
ऐसँ बच्चा कुण्ठित होइ छै
और होइ छै मानसिक आधात।।
गीत-
कनी देखही दिनेश
कनी सुनही सुरेश
कनी मानही महेश।-2
माता अज्ञान बस फँसलै कलेश।-2

नैनाकेँ नहि स्कूल धरबै छै
घरक अपन सभ काम करबै छइ।-2
अपने नैनाकेँ गला मोकै छै
तेकर रक्षा केना करतै गणेश।-2
कनी...।

बकड़ीमे भरि दिन गोली खेलै छै
अपना जिनगीकेँ दुखमे ठेलै छै।-2
माताजी ओइपर किछ नहि बोलै छै

यै माँ केर नाम दियौ माता भुलेश।-2
कनी...।

समयसँ नहि कहियो खाना बनै छै
स्कूल समयमे बौआ रोजे कानै छै।-2
देखै नइ छी हमर हाथ लगल छै
रौ बजरखसुआ ले ने परैस।-2
कनी...।

आलस नहि माता आप भगबै छै
पढ़ैबलासँ घास कटबै छै।-2
सभटा जे एहने नीपले रहतै
के हेतै देशक भावी नरेश।-2
कनी...।
❑

17.

झारू-
सभसँ भारी दहेज बेमारी
परिणय सुत्रक यएह छी घून।
कनै छै सभ बेरा-बेरी
बहा-बहा नोरमे खून।।

गीत-

कनी देखही किशोर
कनी सुनही किशोर
कनी मानही किशोर।-2
दहेज अज्ञान बस बनि घुसलै चोर।-2

पुतौहुसँ केकरो प्यार कहाँ छै
मन छै ओतै जेतए बापक जमा छै।-2
छोड़ि दियौ लोभसँ ई पाप करनाइ
कनियाँकेँ मानू दहेजक ओर।-2
कनी...।

अपनो लइ छै दोसरोकेँ दइ छै
एक दोसर लऽ दुख सिरजै छै।-2
मनक ई रोग लोग भगबए नहि चाहैए
की करतै शासन सत्ता केर जोड़।-2
कनी...।

दहेज गिना अहाँ की सभ केलिऐ
फोकटकेँ पैसा गर्दा उड़ौलिऐ।-2
नहि रहलै अही घर नहि रहलै ओही घर
बिच्चेमे खा गेलै मनसनकी चोर।-2

कनी... ।

लोभ जबसँ ई जड़ि बढ़ेलकै
लोक भावना केर बलि चढ़ेलकै ।-2
ऊपरे-ऊपरसँ रिसता जुड़ैछै
रहि-रहि कऽ टुटैले मारै छै जोड़ ।-2
कनी... ।
❑

18.

झारू-
गन्दा दहेजकेँ नहि अपनाबू
दुआ लिअ माँ कालीसँ ।
लक्ष्मी बनि दुल्हन घर आबए
सुख शान्ति भरल थालीसँ ।।
गीत-
अहाँ दहेज लऽ दुल्हा किए रूसै छी ।
अहाँ दहेज नै लइ छी जहर छीटै छी ।।
लऽ दऽ दहेजकेँ सभ उजरै छै
घरमे कंगालीक बाढ़ि गुजरै छै ।-2
तैयो नहि कियो लोग सुधरै छै
बाल बच्चा लऽ दुखक सनेस लूटै छी ।-2

अहाँ... ।

नबको लहूमे लोभ पलै छै
तँए तँ दहेजक राज चलै छै ।-2
लोभक गुलाम नहि बनु यौ दुल्हा
अपना बाबूकेँ किए ने कसै छी ।-2
अहाँ... ।

लोभमे फँसि अहाँ बिआह रचेबै
सासुरमे केना मान बँचेबै ।-2
कहा लोभी केना दुनियाँमे जीबइ
अहाँ मानक नगर नहि किएक बसै छी ।-2
अहाँ... ।
❑

19.

झारू-
पैसेटा मे सभटा सुख छै
घेर लेलक सभकेँ अज्ञान।
पण्डित-मुल्ला-साधु-नेता
सभ खोदै पैसा केर खान।।
गीत-
लोभी-लालची कुरसी भरल छै
केना हेतइ जनताक न्याय।
व्यर्थ राज एकरापर करै छै
राज कोषसँ मुद्रा व्याय।।

पदक खाली भरल छै गौरव
पैसा खातिर बनल छै कौरव।-2
केना जीअब ऐ कुरुक्षेत्रमे
परए नै अर्जुन केतौ देखाइ।-2
व्यर्थ...।

अमीरकेँ देखते छाती फटै छै
हमर गरीबी कहाँ हटै छइ।-2
ई शिकार अछि असन्तोषक
धन नहि पड़तै केतौ देखाइ।-2

व्यर्थ... ।

धरम इमान आर छै नहि निष्ठा
लोभमे खाइ छै रिसवत बिष्टा।-2
सभपर चढ़लै लोभक फिभर
कल्ला दबाउ हम दइ छी दबाइ।-2
व्यर्थ... ।
❑

20.

झारू-
कम खाउ आर रहू गमसँ
करू नहि केकरो पमौजी।
रोटी हेतै सत्यक कमाइ
चलतै जिनगी मनमौजी।।
गीत-
भोला गरीबक दिन
अल्ला गरीबक दिन
मौला गरीबक दिन-2
एकरा नहि आगू-पाछू कियो तोरा बिनु।-2

खा जीबै छै कोदो मरूआ

आर खाइ छै चीन-2
ऊपरसँ लादल छै अमीरक रिन-2
भोला...।

देशमे आजादी एलै भारी कठिन-2
मुँहगरहा सभ लऽ पड़ेलै एकरो हिस्सा छीनि
भोला...।

केना पढ़तै नैना-भुटका दिन छै कठिन-2
चारि सेर अनाजपर खटै भरि दिन।-2
भोला...।

तनपर नहि वस्तर घर छप्पर हीन-2
टपर-टपर पानि चुबै छइ।-2
उड़ि पड़ेलै नीन।
भोला...। ❑

21.

झारू-
शान्ति सम्पन्न ओकरे जानू
जे तन-मनसँ सोझ छइ।
राम सुमरनी बगल कतरनी
तेकर जिनगी बोझ छइ।।
गीत-
जे किछु देलकै खून पसेना
मस्त ओहीमे रहबै यौ।
करमकेँ तौलबै सोलह आना
रोब केकरो नहि सहबै यौ।।

प्रकृति केर गजब छै खिस्सा
करमसँ करै भोगक हिस्सा।-2
जे किछु मिललै मनमे रखबै,
दुख केकरो नहि कहबै यौ।-2
करम...।

करब सिमित हम अपन इक्षा
किए लेबै केकरोसँ भिक्षा
करमसँ मिलतै जे किछु हिस्सा
सबुर ओहीमे करबै यौ।-2

करम... ।

पोसि कऽ रखबै एकटा जिन्दा
करबै नहि केकरो निन्दा–बिन्दा।-2
एक ठाँउ मिल कऽ सभ कियो रहबै
लड़ाइ-झगड़ा नहि करबै यौ।-2
करम केर... ।
❑

22.

झारू-
धोबैत-धोबैत ऐ जगवासी केर
केकरा कहबै दुख छल भारी।
की करबै आब ग्रसि गेल अछि
प्रदुषनक दोसरो बेमारी।।
गीत-
गंगा मैया हे तोहर महिना अगम अपार।-2
पियास मुझबैए जगवासीकेँ
तोर निर्मल जलधार।-2

नमन करै छै दुनियाँ तोरा
छै नहि जगमे तोहर जोड़ा

तोरा तटपर जमघट लागल
सैंकड़ो शहर-बजार।-2
गंगा...।

युग-युगसँ तोहर जलधारा
सिंच रहल छै धरती प्यारा
मकई-मरूआ-धान-खेसारी।
घर भरल भण्डार।-2
गंगा...।

बोझ उघै छी भारी-भारी
बेकतीगत होइ आकि सरकारी
तोरे लहरपर आइ लहराबै
भारतमे वेपार।-2
गंगा...।

युग-युगसँ तोहर निर्मल जल।
धोइ रहल छै दुनियाँ केर मल
जगत पाबनी गंगा मैया
खुद सुद्धी केर भिखार।-2
गंगा...। ❑

शासक सुधारक महा झारू-

जय हिन्द हे देशक धरती
जय हिन्द देशक जनता।
जय हिन्द हे ताज देशक
जय हिन्द सम्प्रभुता।।

आस्तिक-नास्तिक दुइ भावसँ
बनल प्रकृति द्वन्द्व विधान।
आस्तिक जग निर्माण करए
नास्तिक करए जगनाशी काम।।
जब हेतै आस्तिक गुण राजा
देशक हेतै नव-निर्माण।
जनता पहिरए प्रेमक माला
एकता धनसँ भऽ धनवान।।
जब हेतै नास्तिक गुण राजा
जनद्रोही हेतै सभ काम।
बिखरए जनता टुटल माला
देश बनि जाएत दुक्खक धाम।।
राज विद्याक खेल नै जानू
ई जगमे भारी विज्ञान।
जे गुनलैन अछि पाठ मानवताक

हुनके छैन एकर पहिचान।।
राज विद्याकेँ ओ की जानत
जेकड़ा हाथ लाठी भैंसबार।
लाठीसँ केतौ राज चलै छै
राज चलाबए कलम तलवार।।
राज हुनकेसँ चलि सकै छै
जिनका रगमे दानी खून।
स्वामी भाव अंग-अंगमे भरल होइ
और भरल होइ सेवा गुण।
जेकर हाथ हमेशा निचाँ
ओ बाबू नै कुर्सी जोग।
ऐ बुन्नकेँ शासनकर्मी
ताकए घोटाला केर संजोग।।
प्रजावत्सलकेँ जाने भाषा
जनहितमे बस टिकल होइ मन।
रोम-रोम जनताकेँ समर्पित
और होइ अर्पित जीवन धन।।
जानै नै जे सेवा भाषा
धन-धारण बस आखिरी धून।
हाथ हमेशा जेकर नीचाँ
ओ की जनतै दानक गुण।।

मन रंगल होइ सत्य भावमे
तन चढ़ल निष्ठा केर वस्त्र
एक हाथमे पालन डोर होइ।
दुजेमे रक्षा केर शस्त्र।।
चोरबा-चुतिया हाथमे परतै
जब-जब देशक शासन डोर।
लूट-मार चोरी डाका संग
बलात बढ़तै लगा कऽ होर।।
सच्चा शासक हुनके जानू
मानवतासँ रंगल होइ देह।
नीत-इमानक ताज चढ़ल होइ
दिलमे होइ जन-जनसँ नेह।।
निष्ठाहीन जब शासक हेतै
समझू देशक विधाता बाम।
पहिया विकासी पन्चर चलतै
न्याय केर रहतै चक्का जाम।।
लाज रहत तब राज ताजकेँ
ब्यापै नै एकरा त्रिविध ताप।
पाबै नै एकरा पुत्र प्यारा
सतबै नै एकरा माए-बाप।।

आँखि छोड़ि कऽ कानपर देतै

जब-जब देशक राजा जोड़।
भुख गरीबी सिर चढ़ि बैसतै
उफड़ा जेकाँ उपलेतै चोर।।
शत्रु मित्र नै ताजकेँ धरै
छुबै नै एकरा सुन्दर नारी।
ताज नै पकड़ै जाति-धरमकेँ
और नै टोकै पत्नी प्यारी।।
तन-मन मैला राजा हेतै
समझू राजा ओ अज्ञान।
रहै निरक्षित राजक जनता
देशसँ मेटेतै नीति ज्ञान।
ताज जलै नै क्रोध आगिमे
डुबै नै ई लोभक घोल।
काम मोह नै अहं सताबै
वर्णा की रहतै एकर मोल।।

पद गौरवकेँ अंधा राजा
और हेतै मनक विकलांग।
सोना उपजै वाला खेतमे
तब उपजतै गाजा-भाँग।।
तन अहाँक एक यंत्र मात्र छी
कुछ कराबू एहेन काम।

धरतीपर जे अमर कराबे
ऊँचा कराबै जगमे नाम।।
❑

हकार झारू-

अपार हर्षसँ सूचित करै छी
तारीख तीन पाँच दिन सोमवार।
अष्टयाम करबए जा रहलै
रसुआर-बला सुमन कुमार।।

भेज रहल छी सिनेह बुलाबा
मान्यवार अहाँ करब स्वीकार।
बहुत केने यज्ञ अहाँ सफल छी
हमरोपर करब उपकार।।

बाट जोहब हम पलक बिछा कऽ
जे अपनेकेँ मिलल समय।
प्रियवर भुलि नहि जाएब हमरा
बारम्बार कऽ रहलौं विनय।।

कऽ नै सकब हम अहाँ केर सेवा

जेतेक करब ओतबे हएत कम।
कनी कृपा कऽ हाथ बढ़ाबू
हमहूँ भऽ जाएब बम-बम।।
❑

अभिवादन झारू-

प्रफुलित छी हम बरियाती
समा रहल नहि हृदय फूल।
अवर्णनीय सेवा पाबि कऽ
रहल याद नहि राहक शूल।।

जगमगाइत जनकपुर नगरी
श्रद्धामय नर नारी कुल।
की वर्णी ऐठामक शोभा
सभ बुझाइत अछि मंगल मूल।।

मंगलमय ऐ शुभ घड़ीमे
दुनू माली केलैन कबुल।
सुख-दुख दुनू बाँटि बरबैर
रोपब नव बगिया केर मूल।।

चिरजीबी हौउ दुल्हा दुलहीन
हएत आवाद नव श्रृजित भवन।
दऽ रहलौं आशिष हम जगवासी
दुख नै देत झोंको पवन।।
❑

न्याय सुधारक झारू-

न्यायालय तँ एक क्षत्रि मात्र छी
जे धारै नित्य धरम धनुष।
मारै ओ जगनासी दानव
मानव भीतर केर बेमनुष।।

ज्ञानसँ होइ छै सुख दुनियाँमे
छी अज्ञान दुखक भण्डार।
सोचि-समैझ एकरा अपनाबू
प्रकृति केर दू हथियार।।

जब घेरलक अज्ञान अन्हरिया
शुरू केलक तन काम बुराइ।
काम-क्रोध-मद-लोभक लाठी
हाथ धरा करबौलक लड़ाइ।।

काम-क्रोध-मद-लोभसँ
होइ छै जगमे झगड़ा खड़ा।
नीच कमीना जगबैबला
मेटनहार कियो ज्ञानी बड़ा।।

जब जागल केतौ झगड़ा कोनो
आस्तिक बनि कऽ कराबू मेल।
बढ़बू नहि एकरा नास्तिक बनि कऽ
वर्णा जलि जाएत काफी तेल।।

जब झगैर गेल दू अज्ञानी
ब्रेक ज्ञानक करि कऽ फेल।
मोश्किल भारी एकरा बुझेनाइ
कठिन छै करनाइ एकरा मेल।

जब झगरल अज्ञानी ज्ञानी
किछु आसान छै एकर मेल।
ज्ञानी तँ छै अपने डगरपर
अज्ञानीमे किछु जलतै तेल।।

ज्ञानी-ज्ञानी किन्नौं नहि झगड़ै
नित्य इमानक खेलै खेल।

एकरा लेल नहि विधि बेवस्था
बनल नहि कोनो जुर्माना जेल।।

बढ़इ नहि झगड़ा सहि लिअ थोड़े
ई तँ छी ज्ञानी केर काम।
वर्णा फल किछो भऽ सकैत अछि
भऽ सकैत अछि चक्का जाम।।

जखन कियो टेंसन बढ़ाबए
ज्ञानी बनि कऽ धरू धीर।
बीच बजाबू तेसर बाबू
निश्चित मिलतै फलमे खीर।।

धधैक पड़ल जँ आगि सन झगड़ा
जरा कऽ ई अज्ञानक तेल।
जेते दूर धरि एकर इंधन
लपैट लेलक आ टुटल मेल।।

सामने डटि कऽ दू अज्ञानी
बनि खड़ा छै जंगी दूत।
समझू एकरा ऊपर चढ़ि गेल
दुनियाँ केर अज्ञानक भूत।।

बीच पधारू ज्ञानी एहेन
जगमग भीतर ज्ञानक दीप।
निष्ठा केर सागरमे पालल
मोती युक्त मानवता शिप।।

जब भी जागल ऐ धरतीपर
आगिक भाँति झगड़ा झेल।
आस्तिक बनि कऽ पंच ग्रामीण
करबैत आएल झगड़ा केर मेल।

तीसरा पक्ष जे पंच परमेश्वर
देख-सुनि कऽ समझे बात
करै फैसला रीत पुरनासँ
पड़ै नहि केकरो जइसँ लात।।

पंच ग्रामीण गंगा बनि कऽ
केलैन सदियोसँ मुफ्त उद्धार।
छीनि लेलक शासक एकरासँ
सनातनी एकर अधिकार।।

तीसरा पक्ष जँ बनत शासक

खड़ा करत ओ ओकरा पास।
हाथ पड़ल काँटा देखबा-ले
पट्टी बान्हल आँखिक आस।।

आँखि-कानसँ पंच छै पूरा
करू एकरेपर पूर्ण बिसवास
अन्धा कोटमे लोभी कर्मी
पुरा नहि हएत अहाँ केर आस।।

अनपढ़ अल्हर ऐठामक जनता
की जानत कानूनी बात।
लूटि रहल ऑफिसर वक्ता
मारि कऽ एकरा पेटमे लात।।

कोट फेरमे एतए दुखारी
बनि जाइ छै कंगालक भेष।
तैयो न्याय छै ओतबे मोश्किल
जेते गधाक सिंहपर केश।।

कोट मात्र छै धनबला-ले
अइमे केतए गरीबक आस।
पैसोबला कुहैर कऽ पाबए

गरीब छिलै छै घोड़ा-घास।।

दीर्घ बनि गेल विधि-बेवस्था
न्याय तक लोक पहुँचै छै कम
शासक बान्हने आगिक मोटरी
उघि रहल अज्ञानक दम।।

आगि छी झगडा न्याय पानि छी
दुनूकेँ होइ सूत्रवत संयोग
एहेन अगर जँ भऽ नहि सकल तँ
जनता मरत न्याय वियोग।।

दीर्घ सूत्री कर्म तमो गुणी छी
न्याय हुअए बस रासजी गुण
दीर्घोमे ई अति लगा कऽ
कर्मी पिसा रहल छै घुन।।

मात्र विधियेटा दोखी नै छइ
दोखी एतए केर ओ इंसान।
लोभ लालच अज्ञानक कारणे
बेच रहल जे धरम इमान।

नहि जानलक ओ विधि रचयिता
आगू होएत नैतिक पतन।
लोक बेच इमान धरम केर
करत मात्र पैसा केर जतन।।

न्याय मिलै या अन्याय ओकरा
बनैतरहै बस हमरा माल
वक्ता बाबू कोटक बाहर
बिनैत रहैत अछि हरदम जाल।।

न्याय मिलै या अन्याय ओकरा
ई तँ जानै दाता राम।
पूर्ति होइ तारीखक पैसा
दू-चारि गप दऽ कऽ गुमनाम।।

कहाँ कोटमे एहेन कियो
जेकरा संग होइ नीति इमान।
वर्णा कोट किए ई उघैत
केश-फाइलक भारी थान।।

बुड़ा भेल ऐ कोटमे एनाइ
एकरा चक्करमे भेलौं बेरबाद

नीक होइत पंच-पंचैती
दुनू घर रहितौं आवाद।।

ऐ सँ नीक अहाँ तबे रहितौं
मानितौं नीति और विधान।
काबू रखितौं काम-क्रोधपर
दाबि कऽ रखितौं धनक शान।।

साठि बरखसँ देख रहल छी
केलौं नहि हम कोनो सवाल।
पुछैले किछु मन करैए
डरै छी की होइ नहि बबाल।।

गीता पुछि रहल न्यायालयसँ
न्यायपर किछु चन्द सवाल।
की केलौं अहाँ साठि सालमे
की सुधारलौ न्यायीक हाल।।

बड़ा कठिन प्रसतावना दोसर
की न्यायालय अहाँ रहलौं निभा
पैसाबला न्याय पबैत अछि
गरीबक फाइल रखने छी सजा।।

बाइबिल पुछि रहल न्यायालयसँ
साठि बरखक पुरना इतिहास।
की जिन्दा अछि एतए मानवता
भऽ रहल की संग एकर विकास।।

सुना रहल कुरान अहाँकेँ
साठि बर्खक अपन फरियाद
बहुत उघलौं केश-फाइलक बोझा
मारए चाहै छी किए आर लादि।।
❑

निन्द्राशन झारू-

सुतल छी अहाँ काँट बिछौना
आ सुतल छी बिस्तर फूल।
सभ किछु करि कऽ सम बरबैर
गेलौं प्रकृतिमे अहाँ मिल।।

जब समेलक अहाँकेँ बाबू
निन्दिया रानी अपना आगोश।
रहल कहाँ हक तनपर अप्पन

रहल नहि आर जग द्वन्दक होष।।

प्रकृति केर भाव छै ओहने
जेहेन अछि निन्द्राशन रूप।
काम-क्रोध नहि लोभ सताबै
आर नहि व्यापै छाया धूप।।

लग नहि आबै सुख-दुख कोनो
आलऽसो छोड़ि दइ छै संग।
मुक्ति मिलै कर्म बन्धनसँ
माया-मोह नहि करइ तंग।।

बैर दोस्ती ऊँचा-नीचा
क्षेत्र भाषा आ जाति धरम।
निद्राशनमे किछु नहि ब्यापै
शोक चिन्ता आ भेद भरम।।

रहैत नहि अछि निद्राशनमे
पुत्र-पत्नी घर धनक चाह।
रहैत नहि अछि द्वेष केकरोसँ
जोहै नहि कोनो सुखक राह।।
❑

पैसा सुधारक झारू-

पैसा पैसा हाय पैसा
पैसा छी जीवन केर जाल।
पैसाकेँ एना नहि समझू
पैसा भगाबै सबहक काल।।

पैसा कटाबै बापक गरदैन
पैसा छी तलवारक धार।
साधु मुल्ला पण्डित कटै छै
राजा केर कटै कुल परिवार।।

पैसामे बल गजब अछि भारी
मचा सकैत अछि ई भूचाल।
पाबि कऽ पैसा बलहीनो तँ
ठोकै बलवानोसँ ताल।।

पैसा खूब कमाबै बेटा
तब बेटा छी बेटा लाल।
जँ बेटापर पड़ल समस्या
बाप बनल बेटा केर काल।।

पैसामे भारी कमजोरी
संतो देखै दारू केर खान।
केतौ केकरो मान बढ़ाबै
केतौ करै केकरो अपमान।।

पैसामे भारी शक्ति छै
हिला सकै छै ई कोतवाल।
ऐसँ हिलै नेता मंत्री
और हिलै गामक चौपाल।।

पैसामे छै गजब केर धोखा
और भरल छै भारी खोंट।
पुत्र पिता पति पत्नीमे
देखा सकै छै सभकेँ कोट।।

पैसा भीतर शान्ति भारी
ई देखाबै स्वर्गक सुख।
जे पौलक ई नीति-धर्मसँ
मिट गेल ओकर सभटा दुख।।

पैसा छी दुनियाँक इंधन
जग मशीन पैसा छी तेल

जँ छोड़लक साथ ई केकरो
पैघ-सँ-पैघ इंजीनियर फेल।।

पैसा भीतर भार छै भारी
दबा सकै छै भारी राज।
और दबाबै असत्य बोली
दबा दइ छै सत्तो अवाज।।

पैसामे छै सुख अजूबा
जँ जेबीमे लाख-हजार।
ओ सभटा छी साधन अपन
जे बिकाइत अछि हाट-बजार।।

पैसामे दुख गजब छै भारी
जँ फँसल झंझटिया हाथ।
मरि गेटा बिनु पैसा केर
फेर देतै ओ कहिया साथ।।

पैसामे छै शोक अजूबा
हुण्डी लागि गेल चोरक हाथ।
अन्न-पानि बिनु ठठरी सुखल
तीत लगै छै मिठो बात।।

पैसामे छै लोभ अजूबा
परिणय सुत्रक यएह छी गाँठ।
बिनु एकरा कोनो सुत्र नै जुटै
पढ़ने समाज अछि एहने पाठ।।

पैसामे सद्गुण छै भारी
करा सकै छै जग आ जाप।
करा कऽ सेवा दीन-दुखी केर
मिटा सकै छै तनक पाप।।

पैसा एक कमानी जानू
फना सकै चोरोकेँ जेल।
नर रहितो नारी बनि कुदै
और देखाबै कोन-कोन खेल।।

पैसामे छै भूख अजूबा
भरल नहि ऐसँ केकरो पेट।
राजा भुखल जनता भुखल
भुखलअछि साधु और सेठ।।

पैसा छी अज्ञानक पूजी

करा दै छै अपनोमे झेल।
नीति बिगारै धरम उजारै
करा देलक जुर्माना जेल।।

पैसा खोलै ज्ञानक कुण्डी
एकरा बिनु नहि कियो गुणवान।
पैसासँ जँ जेब भरल होइ
अनपढ़ बाँचै वेद पुरान।।

पैसामे छै गजब केर तागत
तोड़ि सकै छै लोहा गेट।
चोर-सिपाही धरती-गगन सन
पैसा जोरसँ दुनू सेट।।

पैसामे चन्दनक खुशबू
सुंघि लेलक जँ पॉकेटमार।
सही-सलामत जेब छै ओतइ
सिरिफ ओतए-सँ पौसा पार।।

पैसा जँ नव दुल्हिन पौलक
फुटै ओकर घोघहा गाल।
सासु ननैद दियरकँ मारइ

घरमे बनि गेल सबहक काल।।

पैसामे सनकी छै अजूबा
जँ फोकटमे आएल हाथ।
मासु-मदिरा दारू लौलक
कऽ देलक पूरा पत्ता साफ।।

पैसामे भारी चंचलता
सोचि-समैझ कऽ राखू हाथ।
जँ कनियोँटा भेल ढीठाइ
चलि देलक दोसराक साथ।।

पैसा पर्दा भीतरक छी
ऐपर भारी पर्दा डाल।
जँ हएत कनियोँ ऐमे ढिठाइ
बनि जाएत जिनगी केर काल।।

पैसामे छै जोर निराला
बना सकै अछि बिगड़ल काम।
और बिगाड़त बनल बनाएल
कऽ देत पलमे चक्का जाम।।

पैसाक छै काज अजूबा
करि दइ छै केकरो मालामाल।
कियो कनै छै पैसा खातिर
कियो घुमै छै बनि कंगाल।।

पैसाकेँ नहि प्यार केकरोसँ
ई तँ छी दुनियाँ केर मर्ज।
जा कऽ ओइ बन्दासँ पुछू
जेकरा ऊपर लादल कर्ज।।

पैसा जँ अज्ञानी पौलक
चढ़ि बैसल ओ गीरी सुमेर।
दुनियाँ लागै कीट फतिंगा
खुदकेँ समझै बब्बर शेर।।

पैसा होइ छै शशिसँ शीतल
जँ पौलक ज्ञानी होसियार।
करि कऽ सेवा दीन-दुखियाकेँ
कऽ लेलैन अप्पन बेड़ा पार।।

पैसा जँ कंजूसकेँ पौलक
बढ़ि गेल ओकरा साए मन भार।

तर तबेलक ओत्ते निच्चाँ
सकल पाएब नहि कियो पार।।

पाबि कऽ पैसा बदैल गेला ओ
जे छल पहिने भला इंसान।
पैसा ओकर नीति बिगाड़लक
बनि गेल आब भारी सैतान।।

पैसामे घुंटन छै भारी
फँसल मधुर रिस्ता-के हाथ।
भीतरे-भीतर आँत ममोड़इ
जुवां नहि उतरै माँगक बात।।

पैसामे छै खनक प्यार-के
जँ लेनाइ अछि रकम उधार।
लव स्टोरी मनगढ़ जोड़
कऽ लिअ ओकरा पलमे तैयार।।

पैसामे छै जोश अनोखा
खेत बेच कऽ लौलक नोट।
लड़ल चुनाव मुखियाकेँ हराबे
पेटीसँ निकलल दूटा भोँट।।

पैसा कऽरू मरचाइयोसँ
जँ देखल दुश्मनक हाथ।
ताकए लगल युक्ति एहेन
जल्दी छोड़ै ओकर साथ।।

पैसासँ ओ इज्जतबला
काम करए चाहै सैतान।
तैयो पुजै ओकरे दुनियाँ
किएक तँ ओ छै पैसा मान।।

पैसा चलाबै भाइपर भाला
और चलाबै फरसा गोली।
केतौ खेलाबै भाइ-भाइ
बिनु फागुनोक खून-होली।

नीति-धरम इमान-ज्ञानसँ
पैसा केर उचा स्थान।
रिस्ता-नाता सभ किछु फिक्का
उचा नहि ऐसँ भगवान।।

साधु मुल्ला पण्डित ज्ञानी

के नहि छै पैसा के भक्त।
एकरा पाछू सौंसे दुनियाँ
करि रहलै तपस्या सख्त।।
❑

ज्ञान सुधारक झारू-

करू कृपा हे वीणा-पानी
मानवमे किछु दियौ ज्ञान।
भटैक गेल ई अपन रस्ता
भाइयो लगै छै शत्रु समान।।

ज्ञान बराबैर ऐ दुनियाँमे
नइ छै कियो नासी पाप।
करू साफ बस तन-मन अपन
आबि कऽ बसतै अपने आप।।

इच्छा द्वेष छै सुख दुखकारी
प्रकृतिक द्वन्द विधान।
ऐ जालसँ बाहर जे छै
सुख सम्पन्न छै ओ इंसान।।

सुख-दुख दुनू सम बरबैर
जे केलैन ज्ञानी विद्वान।
एकरा जालसँ जे छै बाहर
मुक्त हमेशा ओ इंसान।।

इच्छा द्वेषसँ किछु नहि मिलै छै
कऽ लिअ मनमे अनुसन्धान।
मिलत वएह जे कर्म केने छी
प्रकृति केर अटल विधान।।

जीनाइ तँ ओकरे जीनाइ छी
जे जानलक ई गहरा राज।
घ्ज्ञन जीवनकेँ दाउ लगा कऽ
कऽ रहल जनहितक काज।।

तन अहाँक यंत्र मात्र छी
किछु कराबू एहेन काम।
भार मिलल जँ राज काज-के
कऽ दियौ जन-जनक कल्यान।।

शक्ति सम्पन्न बाबू भैया
सुनू लगा कऽ थोड़बो धियान

शक्तिकेँ जनहितमे लगाबू
दुनियाँमे बढ़ि जाएत नाम।।

पढ़लासँ नहि विद्या होइ छै
सीखलासँ नहि होइ छै ज्ञान।
पाठ दया केर जे कियो गुनलैन
हुनकर ज्ञान छै जगमे महान।।

खर्चा कऽ देलौं सौंसे जिनगी
अपने बाल बच्चाक बीच।
अपन शत्रु अपने पोसलौं
लोभ मोहक जलसँ सिंच।।

हम और हमरा केर जालमे
फँसि जीबै छै सारा बन्दा।
अहीं मोहक कारण मानव
काम करै छै बनि कऽ अन्धा।।

धन लगाबू ओकरा खातिर
जे जिनगीमे राखए याद।
सभ किछु ओकरे नहि दऽ दियौ
चौथापन मे करबे फरियाद।।

सुख दुख वस्तु हाट बजारू
बदलल जाइ छै कर्मक दाम।
जे किछु मिलल करम बरबैर
चलबए पड़त अहीसँ काम।।

कर्म केलौं अज्ञानक बुत्ता
हरदम जइमे दुखक आस
सुख मिलै छै ओइ बन्दाकेँ
जेकरा भीतर ज्ञानक बास।।

इच्छा छी सभ दुखक जननी
राखू एकरा बेरा डाल।
एकरा जँ अहाँ मुक्त रखबै तँ
खड़ा करत अनेको काल।।

सूत्र मंत्र छी कोनो काजक
गुरु सुजान ई दइ छै दान।
गुरु संग जँ ज्ञान नहि लेलौं
रहि गेलौं जगमे अज्ञान।।

आदर जँ तूँ पाबए चाहै छेँ

पहिले आदर करनाइ सीख।
तूँ देबही जँ हाथ कटोरी
माँगए पड़तो तोरो भीख।।

बीतलपर करी की पछताबा
आगू तँ छै अपने हाथ।
वर्तमानमे अखन सुधारू
कसि धरू सत्य कर्मक साथ।।

कम खाउ और रहू गमसँ
करू नहि केकरो पमौजी।
रोटी होइ बस मेहनतक कमाई
चलतै जिनगी मनमौजी।।

ओ अमीर अछि ऐ धरतीपर
जानलक जे भाषा सन्तोष।
मिलल जे किछु दशो नहसँ
मानलक ओकरे कुबेरक कोष।।

ओकरा तँ कंगाले जानू
संग नहि जेकरा छै सन्तोष।
नीति-अनीतिकेँ किछु नहि मानत

पैसा खातिर रहत बेहोश।।

अमर दुनियाँमे ओकरे जानू
काम करै जनहितमे नेक।
एहेन सुरमा कम जनमै छै
ई समझू लाखोमे एक।।

छेलौं नहि ऐसँ पहिले हम सभ
रहबै नहि फेर ऐ केर बाद।
प्रकट छी जब तक ऐ धरतीपर
तइ बीच जिनगी करू अबाद।।

बड़ अगर जँ बनए चाहै छी
छोट बनानइ फेर करू स्वीकार।
एहेन अगर जँ कऽ नहि सकै छी
फेर मनक लड्डु बेकार।।

दुनियाँकेँ अहाँ अप्पन मानू
दुनियोँ मानत अहाँकेँ मीत।
जँ सच्चा हएत दिलक भावना
भऽ गेल फेर अहाँ केर जीत।।

ज्ञानीकेँ कोनो जाति नहि होइ छै
नहि होइ छै कोनो एकर धर्म।
ई पूजारी सत्य निष्ठा केर
और पुजै नित्य सत्य कर्म।।

मान नहि केकरा नीक लगै छै
नीक लगै केकरा अपमान।
करू दया सभ जीव-जगतपर
पूरत अहूँक ई अरमान।।

काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह सन
सभ खेतमे दुखक बीज।
जँ पनपल ई मौका पाबि कऽ
कऽ गेल सुखक पावर सीज।।

करू नहि आदर केकरो बेसी
केकरो संग ई होइ नहि कम।
होइ चाहे कियो जीव-जगत केर
मानू सभकेँ अपने सम।।

जग हरदम प्रकृति गोदमे
जीब रहल पी कऽ एकरे रग।

बिना पुरुखक जग जनमौलैन
रज-बीज रहित और बिनु भग।।

अध्ययन करू ई पंच प्रकृति
सबहक लेल ई केना छै सम।
यएह भाव जे मानव धरै
ओ नहि रहतै ईश्वरसँ कम।।

प्रकृति किन्नौं भुलि पाबए
अहाँ नहि रखै छी एकरा याद।
जँ भऽ जाएत एहेन जुदाइ
समझू अपना के बर्बाद।।

जानलासँ गम उबजै छै
जानलेसँ होइ छै दुख।
जानलेसँ प्यार उबजै छै
और एकरेसँ होइ छै सुख।।

तौलु तनकेँ धरम तुलापर
भऽ सकबै की हम अमर।
की फैदा एहेन जिनगीसँ
व्यर्थ लड़लौं जग भूमि समर।।

राजासँ जँ मंत्री भँजगर
जइ देशमे हेतै यार।
दिन दूना राति चौगूना
विकासक संग हेतै सदावहार।।

पाप समुन्द्रमे ज्ञानक नैया
जगमे जे चढ़ी उतरल पार।
सुख शान्तिक पाबि खजाना
कऽ लेलैन जिनगी सदावहार।।

पाप समुन्द्रमे डुबैबला
हमर झारू सोंच विचार।
झटसँ पकड़ ज्ञानक नैया
पटसँ उतरू सुखक पार।।

तन अहाँकेँ क्षेत्र मात्र छी
ज्ञाता मात्र प्रकृति जान।
जे जानलक दुनू केर रिसता
गीता कहै छै ओकरे ज्ञान।।

गुथल छी ऐमे जीव जगत केर

जहिना धागामे मोती।
अभिन्न छी हम सभ एक-दोसरसँ
जहिना बातीसँ ज्योति।।

प्रकृति एक तरू लता छी
फूल फल छी हम जीव तमाम।
केतए कल्पना ऐ बिनु हमर
हिनका नहि छैन हमर काम।।

जीव दुखै नहि जानि बुझि कऽ
भऽ सकए जेतै बाँटू प्यार।
शत्रु मित्र नहि वैरी कियो
यएह तँ छी मानव अवतार।।

सूर्या ताप जल वायु-क संग
धरती और गगनक तीर।
सूत्रवत संयोग करै छै
जइसँ जनम मरण जंजीर।।
❑

समय सुधारक झारू-

संग समयक चलनाइ सीखू
एको पल छै बड़ बलमान।
पलमे प्रलय भऽ सकै छै
भऽ सकै छै चक्का चाम।।

पल-पलकेँ उपयोगमे लाबू
समयक कीमत भारी जान।
जे कियो एकर मोल नहि जानए
समझू जगमे ओ अज्ञान।।

समय नहि केकरो बाट जोहै छै
समयकेँ तूँ खुद कर पहिचान।
समयक संग जे चलऽ जानए
एम दिन जगमे हएत महान।।

जोड़ चलै नहि समयपर केकरो
समयक शक्ति भारी जान।
जे केलक ऐसँ बलजोर
चौपट भऽ गेल ओकर काम।।

समयसँ चलै सूरज चन्दा
समयसँ होइ छै सुबहोशाम।
समयसँ बान्हल सौंसे दुनियाँ
अहूँ करू सभ समयसँ काम।।

पालनापर समय झूलौलक
केलौं समयसँ लिखाइ-पढ़ाइ।
समय दिएलक कुंजीक झाबा
यएह धरौलक लाठी आइ।।

समय लगाबू सत्य संगतमे
और लगा जनहितक काम।
करि कऽ सेवा दीन-दुखीकेँ
उच्च करू दुनियाँमे नाम।।

समयसँ जानू दोस्ती-यारी
समयसँ जानू घर परिवार।
समयसँ जानू पत्नी प्यारी
की करै छै अहाँसँ प्यार।।

समय चढ़ाबै सिरपर टोपी
समय दिलाबै तख्तोताज।

समय कराबै एहेन करनी
बैठ गदहापर कर परवाज।।

गाण्डीव शस्त्र समयसँ भारी
भेल समयसँ ओ निस्तेज।
समय बनेलक कृष्णकेँ भगवान
वएह दियौलक माटिक सेज।।

समयसँ सुतू समयसँ जागू
करू समयसँ सभटा काज।
कोनो पल एहेन नहि बीतए
भेल नहि जइमे कोनो काज।।
बीतल समयपर जुनि पछताबू
आगू समय छै अपने हाथ।
वर्तमानमे अखने सुधारू
पकैड़ लिअ सत् कर्मक साथ।।

समय खिलाबै मखन मिश्री
यएह दइ छै मुट्ठीमे चना।
समयकेँ शक्ति भारी मानू
कहियो कऽ देत ओकरो मान।।

समय एक छी जरैत भट्ठी
जरल नहि ऐमे कोनो सुरमा।
ऐ भट्ठीमे वाय जरै छै
जगमे जे छै नीच कुमर्मा।।

समयक एक-एक पलकेँ चुनू
काम छै बेसी समय छै कम।
समय बितबै ओल-झोलमे
की फैदा करलासँ गम।।

जेकर उत्तर मिलै नहि जगमे
छोड़ि समयपर करू इन्तजार।
प्रश्न कठिन होएत चाहे जेते
हल करत सभ समय तैयार।।

जब-जब जनमल ऐ धरतीपर
रावण जेकाँ अत्याचार।
ओकरा मेटाबे समय रचलकै
राम जेकाँ कोनो अवतार।।

करै नियंत्रण समयकेँ कियो
एहेन कहाँ छै केकरो मजाल।

पलमे करै सभकें नियंत्रीत
देव-दानव आ कोनो महिपाल।।

सहि नहि सकल कियो मारि समयक
एकर लाठी छै बेअबाज।
एकरा मारिसँ बँचए चाहै छी
सेवा करू सभ जीव समाज।।

अन्ध बिसवास अज्ञानकुरीति
छै समाजमे भूल अनेक।
रचु समय किछु एहेन विधाता
उनमुलन होइ मूल समेत।।
❑

भूल सुधारक झारू-

भूल करै जँ बनक पंक्षी
पशु करै तँ और छै बात।
ऐसँ वंचित जीव जगतकें
मात्र छोड़ि कऽ मानव जात।।

भूल केलक जे चाहे कियो
देव-दानव आ कोनो महिपाल।

गला बन्हा गेल फल करनी केर
गलि नहि सकल शक्तिसँ दालि।।

होय छोट आकि पैघ होय
भूल तँ आखिर छी फेर भूल।
छोटो-छोटो भूलसँ मानव
चढ़ि जाइ छै फाँसी शूल।।

भूलसँ होइ छै भारी घटना
यएह कराबै सर्वस्व घ्वस्त।
सभ कदम जे चलै फुलि कऽ
ओकरासँ कालो छै पस्त।।

करै भूल जे जानि बुझि कऽ
लोभ लालच अज्ञानक बस।
उजैड़ गेल घर बनल बनाएल
और मेटल दुनियाँसँ जश।।

रहए दिअ बीबी केर बीबी
समझू नहि रसगुल्लाक रस।
सटू नहि अहाँ माछी बनि कऽ
मनपर अपन शिकंजा कस।।

भूल छी भारी जोश जवानी
लागल रोग ई जेकरा मन।
बँचि नहि सकल ऐसँ जे कियो
मोमक भाँतिसँ गलत तन।।

होइ नहि दुखी कियो जीव-जगत केर
ऐपर राखू पुरा धियान।
जँ भूल होइ एहेन कोनो
पकैड़ कऽ ऐंठु अपन कान।।

भूल केलैन जँ अमीर घराना
ई तँ नहि छी कोनो बात।
ई दोहरेलक गरीबक बच्चा
मिलल इनाममे घुस्सा-लात।।

भूल करै जँ भूखा नंगा
गरीब करै तँ और छै बात।
लोभमे एकरा ओ करै छैथ
जेकरा अरबो केर औकात।।

भूल केलौं पढ़ैक बेला

माय-बापकेँ टाललौं बात।
अक्षर बिनु जग घुत अन्हरिया
नरकमे छै निरक्षर जात।।

दोहराबू नहि ओइ भूलकेँ
सभ बच्चा भेजू स्कूल।
रहै नहि बच्चा कोनो निरक्षर
सभमे फुलाइ ज्ञानक फूल।।

अक्षरमे भगवान नुकाएल छै
अहीमे छै सभटा ज्ञान।
अक्षर गढ़िकेँ जग धरि मानव
कऽ रहल गजब-के काम।।

काम-क्रोध-मद-लोभ-मोहक
चढ़ि गेल जेकरा फिभर ताप।
भूल तँ ओ करबे नहि करै छै
भऽ जाइ छै ओ अपने आप।।

भूल करै जँ बाबू खेतिहर
देखै नहि नित्य अपन खेत।
चौपट भऽ गेल खेती हुनकर

भुखल सुतत खाली पेट।।

की भूललासँ भूल भऽ जाइ छै
की भूललासँ होइ छै पाप।
केकरा भूलि नरकमे जाइ छै
केना चढ़ै छै दुखक ताप।।

सत्य छोड़ि कऽ भूल भऽ जाइ छै
दया छोड़ि कऽ होइ छै पाप।
भूलि मानवता नरकमे जाइ छै
लोभसँ चढ़ै दुखक ताप।।
❑

धर्म सुधारक झारू-

पैघ नहि कियो जाति लऽ कऽ
पैघ नहि कोनो धर्मसँ।
कियो पैध भेल ऐ दुनियाँमे
बस अपना उच्च कर्मसँ।।

जाति धरमसँ तोरि कऽ नाता
पकैड़ ललैन मानवताक डोर।

देखू हुनका चलि पड़ल अछि
खुजल द्वार जन्नतक ओर।।

रंगू नहि जीवन जाति धरमसँ
सभकेँ मानू अप्पन मीत।
नीच ऊँचक भेद बिसैर कऽ
गबैत रहू मानवता-गीत।।

बनू एक सभ भेद बिसैर कऽ
नारा सबहक यएह होइ एक।
दया प्रेम जन सेवा जेकाँ
काज करू सभ नीक आ नेक।।

जगत गुरु सभ ज्ञानी बाबा
लोक कल्याणक रचलैन विधान।
असत्य बना कऽ हुनकर वाणी
लोक बनल छै सभ अज्ञान।।

रचल छै पोथी सभ धर्ममे
करैले सभ मानवक कल्याण।
जन जोड़ बनि कऽ जन फोरू
गेल पसैर ई शकल जहान।।

अलग अलग पोथी सभ केलक
जाति धरम केर भेद खड़ा।
सभ पोथीकेँ एक बना कऽ
मानवताकेँ मानू बड़ा।।

नहि जनमल कियो जाति लऽ कऽ
लऽ कऽ नहि जनमल धर्मक निशान।
जाति धरम मानवता भेदी
खड़ा केलक अछि बस इंसान।।

हिन्दू मुश्लिम सिक्ख इसाई
होइ चाहे कोनो भी धर्म।
सभ पोथी केर एक्के राह छै
सभ कहै प्रधान छै कर्म।।

हिंसाकेँ के दोष नहि मानइ
के करबै मनकेँ अजाद।
लोभ-पाप छी के नहि बाजइ
काम क्रोध करत बर्बाद।।

के कहै छोड़ू मानवता

दोसर केर करू अपमान।
के कहै छै दयाकेँ तियागू
माय-बाबूकेँ करू अपमान।।

सीमा सरहद जाति धरमकेँ
जे मानइ ओ सभ नादान।
रहू अजाद सभ एहेन भेदसँ
सभ जन मानू एक समान।।

जे मानवमे भेद कराबै
ओकरा मानू सबहक काल।
विश्व शान्ति आ जग अमनकेँ
राह करू सौंसे जगमे बहाल।।

जाति-धरम नरभक्षी पंक्षी
एकरा फँसाबू प्रेमक जाल।
करू तैयार मानवता पिंजरा
राखू ओइमे बेरी डाल।।

ओइ पोथीकेँ राखि उसारू
खड़ा करै जे जाति धरम।
आगू लाबू ओइ पुस्तककेँ

मानवता संग होइ सत्य कर्म।।

हे रसुआर केर बाबा बनजरैया
मानव जाति पड़ि गेल बेमार।
ग्रसित अछि ई रोग कमजोरी
एकता दवाइसँ करू उपचार।।

दया करू हे वीणा पानी
मानवमे किछु दियौ ज्ञान।
भटैक गेल ई अपन रस्ता
भाइयो लगै छै शत्रु समान।।

कथनी सुनि लिअ काली माइ
सबहकेँ होइ मानवता ज्ञान।
गिर गेल मानव नरक खानमे
नैतिक पतनकेँ करू उत्थान।।

करू कृपा प्रमेश्वर इषू
मानव धरए धरम धनुष।
रक्षा करै सम्पूर्ण जगत केर
और जाति सम्पूर्ण मनुष।।

मीटै मूलसँ सबहक गरीबी
रहए नहि भुखल कियो इंसान
होइ उत्थान दबल कुचलकेँ
दया करू हे राम रहीमान।

मानव धरए धनुष धरम केर
नीति इमानक पढ़ा कऽ तीर।
खीचै प्रत्यन्चा ज्ञानक गुस्सा
लक्ष्य करि कऽ असत्य लकीर।।

तीनो लोकक हे नाथ महेश्वर
मानव जाति धँसि गेल पाताल
दुनियाँ दुखसँ जीत नहि पाबए
खाली बजबए जानै गाल।।

हे गहबरक डगरीन माता
मानव कोखिकेँ करू सुधार।
लइ अवतार मानवक बच्चा
जग अमन-के करए प्रचार।।

ई मंच होइ जगत सुधारक
मानव सुधरए आजुक बाद।

और सुधारए सौंसे जगतकेँ
रीत-कुरीतसँ करि कऽ अजाद।।
❑

गुरु सुधारक झारू-

गु अन्हरिया रू इजोरिया
गुरु शब्दक खण्डन कर।
सबहक मेटै अज्ञान अन्हरिया
सत्य ज्ञानक ज्योति भर।।

हे धरतीक गुरुड़ ब्रह्मा
हे दुनियाँ केर विष्णु गुरु।
उठाउ निष्ठा केर छेनी-हथौरी
कऽ दियौ जग निर्माण शुरू।।

आँखि तरासु सम देखैले
सबहक दुख सुनैले कान।
हाथ बनाबू हरदम ऊपर
जइसँ करै सेवा ओ दान।।

मुँह तरासू मिठ बोल-ले
पीबैले दुनियाँक जहर।

दाँत रचु एहेन फौलादी
चिबा सकै दुनियाँक कहर।।

पएर तरासु शक्तिशाली
जे पढ़ै जग अमनक ओर।
ब्रेन तरासु तेज तरक्का
विश्व शान्तिपर जेकर जोर।।

पेट पचाबै गम दुनियाँ केर
और पचाबै अनकथ बात।
दिल तरासु देश सेवा-ले
आत्मा होइ जनहितक साथ।।

छाती तरासु बेसी चौरगर
समा सकै संसारक दीन।
आँचल बनाबू शितलता-ले
जइमे जुड़ाबै सभ दीन हीन।।

हृदय गढ़ कोमल कोमल
और तरासु मन निर्मल।
शालिन बनाबू हाथक ओंगरी
जे पियासलकेँ पीबै जल।।

गला तरासु दार सुराही
लागि सकै जइमे कुचल लोक।
नख बनाबु ओइ दानव-ले
बढ़बै छै जे जगमे शोक।।

शिष्य चुनै बस सत्यक रोटी
असत्यक मेवा करए तियाग।
देश-विदेश आ केतौ रहए
हरियर होइ बस ओकर बाग।।

आचरणमे बस पकड़ए सेवा
छोड़ए सतेनाइ नीच विचार।
मानवक ई मूल मंत्र छी
मास्टर बाबू करू साकार।।

शिष्य धरए बस राह शान्ति
परोपकार होइ अन्तिम लक्ष्य।
शिक्षक बाबू विषयमे जोड़
धरम इमान सत्य नीति केर पक्ष।।

शिष्य करए जनहितक रक्षा

सोचि विचारि कऽ युक्ती कर।
रौशन करए नाम देशक
देश भक्ति केर शक्ति भर।।

नवोदय अछि हाथ अहाँकैं
हाथ और भावी नारी नर।
रचू गुरुजी एहेन मानव
जे रौपै सुख शान्तिक जड़ि।।

ताप गगन जल वायु धरती
ई पाँचो प्रकृतिक जड़।
प्रलय प्रभव जीव जगत केर
जिम्मा पालनक एकरे सर।।

पर्यावरण विज्ञान पढ़ा कऽ
तत्त्व ज्ञानक दाबा कर।
हम नहि कहै छी ई लिखल अछि
सातमा अध्याय गीतापर।।

जीव प्रकृति सम्बन्ध जना कऽ
समझाबू ई तत्त्वक ज्ञान।
शून्य भाव प्रकृति शक्ति

एकरे गीता कहै भगवान।।

गुरु कुम्हार शिशु कुम्भ छी
मास्टर बाबू करू साकार।
शिष्य धरए दया प्रेमक डोरी
और धरए सेवाक विचार।।

लोक अछि बान्हल तीन डोरसँ
धर्म समाज और सरकार।
तीनू डोरसँ एकरा जकड़्
ई मात्र अहींक दरकार।।

औंकुरा सुखै असन्तोषक
और उबजै मनमे सन्तोष।
भूलोसँ नहि मनमे पनपै
खढ़-पात जेकाँ इच्छा दोष।।

कोइ छै जिम्मा अपने पेटक
कोइ छै अपने कुल परिवार।
कोइ जिम्मा देश-राज्य भरिक
कोइ छै जिम्मा जग संसार।
❑

मानव तंत्र झारू-

आँखि कान जीह नाक आ त्वचा
एकरा तूँ ज्ञानेन्द्री जान।
एकरे मदैते कियो पबैत अछि
ऐ संसारक कोनो ज्ञान।।

आँखि देख कऽ नाक सुंघि कऽ
सुनैक काम करै छै कान।
त्वचा तँ सम्वेदनशील छै
चिखै केर छै जीहकेँ ज्ञान।।

तंत्र तंत्रिका पहुँचाबै छै
मस्तिष्कमे कोनो संदेश।
कोनो अंग तब करै छै
पाबि कऽ मस्तिष्कक आदेश।।

मदैत करए जे गति गमनमे
एकर नाम छी पेशी तंत्र।
गतिशील छै अहींसँ ई सभ
हृदय फेफड़ा पाचन तंत्र।।

मानव समेत सभ जन्तुमे
लागल अछि अनेको यंत्र।
आबू जानू केहेन होइ छै
जीव सबहक पाचन तंत्र।।

बिरधी काम करै-क क्षमता
भोजनसँ होइ छै तैयार।
पोषक तत्त्वकेँ तनमे लगा कऽ
बाहर त्यागै जे बेकार।।

वृहद्रांत, क्षुद्रांतक संगमे
गुर्दा यकृत और अमाशय।
ई सभटा तँ पाचन तंत्र छी
ग्रासनली मुँह पिताशय।।

मुँह-दाँत और अमाशयमे
ब्रिज बनल एक नली ग्रास।
ई पहुँचाबै आमाश्यमे
अहाँ जे खाइ छी मुँहमे घास।।

ग्रासनली ओकर नाम छी
जे उघैत अछि भोज्य अनाज।
एकरे जड़िसँ शुरू अहाँकेँ

बजैक शक्ति अवाज।।

अमाशय एक झोड़ा जेकाँ
भोजन मथि कऽ करै तैयार।
छोटी आँतक निर्गत करि कऽ
करैत अछि अहाँक उपचार।।

गुँथल छै जे अपने आपमे
जेकर नाओं छी छोटी आँत।
पोषक तत्त्व केँ तनमे लगा कऽ
पोषि रहल जीव समूह बरात।।

शोषण करि कऽ सभ जलकेँ
मलकेँ बनाबै ठोस आधार।
मदैत करै मल निकासमे
त्यागऽ चाहै छी जे बेकार।।

कृन्तक रदनक और चवर्णक
बत्तीस दाँतक तीन गोट भेद।
जे नहि करै साफ सुथरा एकरा
देख कऽ दुनियाँ करै छै खेद।।

कुतरे कृन्तक फारै रदनक

मोलर पीसकेँ करै महीन
यार ई पक्का छोटी आँतकेँ
एकरा कृपा नहि देखए दुर्दिन।।

मुँहक शोभा मीत आँतक
निकलल बाहर लगा कऽ डोर।
पचा सकै नहि आँत अन्नकेँ
लगा लगा कऽ पूरा जोर।।

जतन करू एकरा रक्षापर
कच्चा फल खाउ रोज एक आध।
दू बेर दतमैन नियम बनाबू
सुतैसँ पहिने आ जगला बाद।।

अमृत धारा हवा प्रभाती
जे तन पाबै नित्य विहान।
स्वस्थ्य रहै कोनो दुख नहि व्यापै
और मिलै सत्य कर्मक ज्ञान।।
❑

अन्ध बिसवास सुधारक महा झारू-

हे रसुआर केर बाबा बनजरैया
रूकए नहि पण्डित घरक पास।
डुमल मानव कुरीतिमे
डुमा रहल अन्ध बिसवास।।

लोक छल ओहन समय छल ओहने
चलि रहल छल अन्धा राज।
अन्ध बिसवास तँ गरदा चाटत
लोकमे अछि विज्ञानक अवाज।।

लगाउ नहि फेरी शुद्ध अशुद्धक
ई तँ छी भारी अज्ञान।
बँचु हमेशा प्रदूषणसँ
कहि रहल अछि आइ विज्ञान।।

प्रकृतिक हर एक वस्तु
शुद्धे नहि, अछि अति अछि शुद्ध।
मात्र मुक्त होइ प्रदूषणसँ

मानू एकरा धुअल छै दूध।।

जनम-मरण प्राकृतिक घटना
जानि रहल अछि ई विज्ञान।
पण्डित ओकर अछूत अशुद्ध कहि
अँठि रहल अछि तेकर दाम।।

अछुत अशुद्ध उँचा नीचाँसँ
बाहर आबू ऐ इंसान।
भरम भूत जन-जनसँ उतारू
सभ कऽ पढ़ा कऽ ई विज्ञान।।

पूजा पाठसँ पुण मिलै छै
मानवमे छै भारी भूल।
ई विचार ओकर शोभा छी
जे नइ गेल कहियो स्कूल।।

कऽ लेलौं पूजा मिल गेल शान्ति
सच बाजू दिलपर रखि हाथ।
ई सभ तँ सफेद भ्रान्ति छी
सत्-कर्मसँ सुख होइ साथ।।

पढ़ि-लिखि जँ भूतकेँ देखवत
अनपढ़ देखवत भूतक बाप।
ई सभ तँ पण्डितवादी छी
जे पड़ल वर्षोसेँ श्राप।।

अपना श्रीमान बी.ए. पास अछि
घरमे कनियाँ खेलए भूत।
एहेन डिग्री छै जइ घरमे
ओइ डिग्रीपर कुत्ता मूत।।

भरम नहि भागए औषधि खेने
भागए नहि ई टोना योग।
आइक नहि सदियो केर बात छी
कहैत आएल अछि ज्ञानी लोक।।

तरल स्वर्ग पण्डित पूजासँ
जे नइ देखलक आइ तक कोइ।
जौं ई बात जानत मानव
पण्डितसँ नहि पूजौत कोइ।।

अपने श्रीमान बी.ए. पास अछि
पिनहए विकाशी पत्थर कीन।

की आबि गेल मनमे शान्ति
समझू एकरा कर्मक हीन।।

पूजा-पाठकेँ सत्ता दऽ कऽ
मानव कऽ रहल अछि भूल।
छोड़ि अपना कर्तव्य कर्मकेँ
मन्दिर दौड़ए लऽ कऽ फूल।।

नाम भगवानक लऽ कऽ पण्डित
मचा देने अछि लूटिक धन्धा।
ऐ समाजक पढ़लो-लिखलो
फँसि ओझराइत अछि एकरे फन्दा।।

जप-तप पूजा ढोंग-ढपारी
मिलल अछि केकरा ऐसँ चैन।
कर्म मिलल जे प्रतिपाल केर
डँटल रहू सत्-सँ दिन-रानि।।

चलि नहि सकै कोनो मंत्रसँ गोली
चलत नइ कोनो तोप विमान।
तइ मंत्रपर लाखो खर्चा
करि कऽ पहुँचै स्वर्ग इंसान।।

काम करत केना ई शिक्षा
करत काम केना विज्ञान।
पढ़लो-लिखलो दीक्षा लइले
लानि लागल मुर्खक दोकान।।

करि पूजा खूब फूल चढ़ेलौं
कऽ बैसलौं सभ तीरथ धाम।
केलौं नहि दिन-दुखियाक सेवा
कएल कराएल तब सभ नकाम।।

केलौं परिकरमा यज्ञ कुण्डक
मेटबा लऽ तन त्रीविधि ताप।
छोड़लौं नहि कोनो असत्-कर्मकेँ
ऐसँ कटत की तनक पाप।।

जिनगी भरि केलौं मनमानी
आब बनि गेल जिनगी केर फाँस।
माला-चन्दन गेरूआ धऽ कऽ
मुँह नुकेबा-ले मन्दिरक आस।।

बहुत सतेलक अपन बेटा

जकैड़ गेलौं कर्जा जंजीर।
माथ मुड़ा कऽ जोगी बनलौं
खप्पर लऽ कऽ बनलौं फकीर।।

चेला-गुरु केर खेल धरतीपर
जहिना मंचन नाटककेँ
गुरु चलै खुद नरक रस्ता
संग लगा कऽ चेलाकेँ।

बाबा पण्डित जोंक जगत केर
पीब रहल सभजन केर खून।
हाथ राखि दिलपर आ बाजू
ऐ खर्चामे कोन छै गुण।।

देवी पुजलौं धुम-धामसँ
रखलौं दश दिनक उपवास।
हाथ राखू दिलपर आ बाजू
भऽ गेल की सच पुरा आस।।

देवी पुजलौं लाख टाका केर
लूटलौं मस्ती कहि कऽ पुण।
कैलकुलेटर लगौलक टोना

चलि गेल चक्कू भऽ गेल खून।।

भोली-भाली जनता खातिर
पण्डित बिनलक भरमक नेट
बाहर निकलए ऐसँ केना
छोड़ि नहि देलक केतौ गेट।।

जनताकेँ की बात करै छी
रजोकेँ केने छल अपसेट।
मुरि-मुरि राजा प्रजाकेँ
आइ तक भरैत अछि अपन पेट।।

पढ़ल लिखल यौ ज्ञानी बाबू
उठू जवान सभ करू नहि लेट।
उठाबू शस्त्र ऐ विज्ञानक
फोरू मिल कऽ एकर पेट।।

सुख शान्ति होइ सौंसे जगतमे
कर्म काण्डक बना दियौ गेट।
करू विकास एहेन सद्-बुद्धी
होइ मानव सुज्ञानमे सेट।।

पण्डित छी मानव पथदर्शक
जे कहै छै कथा पुरान।
कऽ देलक पण्डितकेँ खण्डित
ऐ युगकेँ ई विज्ञान।।

पण्डित छल राजाक पथदर्शक
जे करै छै आइ विज्ञान।
जे भेद नहि जानलक एकर
अछि दुनियाँमे ओ अज्ञान।।

बाइस दिनपर पाँच दिनक
बिहारमे पड़ै छै भदबा।
ई भदबा ओकरे सतबै छइ
जेकरा लागल छै भ्रमक कदबा।।

जीबऽ नहि देत ऐ दुनियाँमे
मानवताकेँ धऽ कऽ संग।
जे छोड़तै ऐ अफर जालकेँ
तेकरा दुनियाँ करै छै तंग।।

बाबा पण्डित बिछा रखने अछि
अन्ध बिसवासक भाड़ी जाल।

मुक्त होइ दुनियाँ कुरीतिसँ
करू युक्ती यौ युवा बहाल।।

भरम कुरीति अन्ध बिसवासक
धरतीपर नहि होइ केतौ निशान
ज्ञान विज्ञान और सत्-कर्मकेँ
मिलै मर्यादाक संग सम्मान।।
❑

बेमनुषता सुधारक झारू-

कुर्सी होइ हमरा नीचाँमे
पाबैक छै मन सबहक आस
होइ चाहे कोनो मीलक मालीक
आ छिलैत होइ घोड़ा घास।।

कुर्सी होइ हमरा निच्चाँमे
लागि गेल अछि एकर होर।
जश कुत्ता मर्दापर छाबै
नेता दौड़इ कुर्सीक ओर।।

लड़ब केना ऐगला एलेक्सन
आगू हेतै महिला सीट।

नहि भेल हमरा तँ छोड़
बीबीमे भरि देबै हीट।।

ई सिट छी हमर मल्कियत
छोड़ब केना कऽ मरैत दम।
पहिले चलबै छल बाप हमर
आब छी बापक बदला हम।।

हरा सकत की कियो हमरा
केतए छै केकरो एते दम।
बाप चलै छल फुटक नीति
लूटक नीति चलब हम।।

खिआ-पिआ उच्चा अफरकेँ
बना नेने छी अपन हीत।
चुकल नहि कहियो हमर निशाना
निसचित हेतै हमर जीत।।

बनि कऽ नेता बीबी हमर
छिलतै ओ घरमे घास।
हम घुमब नेता बनि कऽ
कुर्सी होएत बस हमरा पास।।

ई जनता रद्दी केर टोकरी
एकरा पुछी की हम हाल।
नोट लऽ कऽ भोँट देलक अछि
की बाजत ऐ सबहक गाल।।

काम करब सभ जनहितकारी
राखि बाजल गीतापर हाथ।
पैसा एकर नीति बिगाड़लक
बिसैर गेल सभ सप्पतक बात।

कहियो नहि देखने छल पहिले
एते पैसा केर अमार।
लोभमे आबि कऽ सप्पत बिसरल
सभकेँ खा कऽ केलक ढेकार।।

जनता पापी भोँट बेच कऽ
नेता चुनलक आजीवन चोर।
हरदम दुनू लाभ पक्षमे
बन्द केना हेतै घुसखोर।

छल-बलसँ तूँ कुर्सी पौलह

जेना पौने छल रंगल सियार।
जहिया खुलतह भेद तोहर
फेर परतह जूताक मार।।

सीओ-बिडियो सरपंच-मुखिया
सदस समीति जिला परिषद
विकास दूत पंचायती राजक
कऽ देलक हदोसँ बेहद।।

ऐ दूतमे लोक छै ओहन
जेकर कीमत एक चाह-पान
खिआ-पिआ कऽ चौक-चौराहा
चलि दियौ चढ़ि कऽ रिक्सा समान।।

जनहित निष्ठा मानवता केर
छै नहि एकरा किच्छो ज्ञान।
संगमे छै मुर्दा-मर्यादा
घँसल-फटल आ लूटल इमान।।

पौलक कुरव्याती लूटि मारिसँ
बनि गेल नेता लाठीक बल।
संग मिलेलक आर लठियल

गरीबकेँ मेटबैले बनेलक दल।।

हाथ रंगल छै निष्ठा घातसँ
मुँह रंगल मानवता-खून।
सीना सियाह अज्ञान भरल छै
मन भरल लोभ दुर्गुन।।

जनहितकेँ बलिदान चढ़ा कऽ
नैतिकता भेजलक असमसान।
भरल छै कुर्सी ऊपर-निच्चाँ
पहिर-पहिर खद्धर परिधान।।

ओ की जानत सेवा भाषा
बाप जेकर सिन्हकट्टा चोर।
गन्दा खूनक सेवाकर्मी
हरदम देत पैसापर जोर।।

साधुसँ साधु पैदा होइ
चोरक जनमल होइ छै चोर।
नहि जानि अनजानक जनमल
केएत-सँ एलै ई घूसखोर।।

माए असगरे हेतै घरमे
बाप गेल हेतै करैले चारि।
मौकाकैं कियो लाभ उठौलक
अहीसँ जनमल ई घूसखोर।।

बेटा पोसलौं असत्यक धन्धा
और खियेलौं बुड़ी कमाइ।
बनल रहत ओ राहक रोड़ा
समय पड़त तँ बनत कसाइ।।

बेटा पोसलौं कर्जा पचा कऽ
और खिएलौं लूटक माल।
ओ हएत जननासी बेटा
बनल रहत ओ हरदम काल।।

जमा केलौं धन लूटि-लूटि कऽ
बेटा पोसलौं घूसक धन।
राखू नहि कोनो सुखक आशा
जड़ा जीअत अहाँ केर तन।।

जब मिलल सरकारी नोकरी
तन-मन फुलल भेलौं महान।

निकैल गेलौं हम सभसँ आगाँ
पाछाँ रहि शकल जहान।।

कुछकेँ लूटलक मोह नोटक
कुछके पिटलक गौरव पद।
केकरो टाँगलक ख्वाब अमीरी
कियो मरै छै लदि कऽ पद।।

एकरा जानू तब फेर मानू
एकर नाम छी नैतिक पतन।
मारू कुचैल दियौ बेमनुषता
फेर मिलत विकासी रतन।।

जागू जनता करू विचार
केना हेतै एकर संघार।
कर्मनिष्ठकेँ फूलक हार
घूसखौकाकेँ जूता मार।।

सोचि समैझ कऽ कदम बढ़ाबू
कुर्सीमे जनहितक भार।
एहेन नेता अहाँ नहि बनब
बनल छल जेना रंगल सियार।।

नर नेता होइ या होइ नारी
पदपर वएह अछि शोभामान।
लालच छोड़ि जनसेवा खातिर
न्याय विकासक करए काम।।

कुर्सी शोभा ओकरा दइ छै
जे मिलल दिल दिलसँ जोड़ि।
छइ जेतुक्का एहेन रीति
बढ़ै विकास जंजीरकेँ तोड़ि।।

नेता जँ अहाँ बनए चाहै छी
तत्परतासँ रहू तैयार।
रूष्ट होइ जब प्रकृति जनसँ
सेवा करू तब बनि होसियार।।

अर्पण करि दियौ जनसेवामे
तन मनक संग जीवन धन।
धारू माला सत्य निष्ठा केर
लटैक नहि तोड़इ लोभसँ मन।।

सेवा करि कऽ जन समुहक

मानवताक खिंचू लकीर।
ध्वस्त होइ जिनगी सेवा भावमे
चाहे बनए पड़इ फकीर।।

प्रकृतिक हर एक वस्तु
सबहक लेल छै बिलकुल सम।
ऊँच-नीच ई नहि मानए
एकरा लेल नइ जाति धरम।।

अहूँ मेटाबू ऐ भेद-भावकेँ
बनू नेता सभ जन-ले सम।
फेर अहाँकेँ पूजत जनता
मेटा कऽ अपन भेद-भरम।।

दियौ नहि मौका विपक्षकेँ करवनो
हुए नहि कोनो जन अहितक काम।
हवा चलल छै घोटाला केर
लिस्ट नै चुनए अहाँक नाम।।

दाग लगए नहि कोरा तनमे
सेवा दियौ सभजनमे सम।
काम रंगल होइ मानवतासँ

फेर किए विपक्षक गम।।

प्रजातंत्रक नीव विपक्षी
अहाँक ऊपर भारी भार।
विकास काज जँ राह नइ पकड़ै
चढ़ि बैसू पक्षक कपार।।

बनू विपक्षी अरियल तगरा
सत्ताधारी केर आगू शेर।
करै अनरगल सत्ताधारी
झपैट परू करू नहि देर।।

बनू विपक्षी अरियल तगरा
गलतीपर बनि जाउ फौलाद।
यएह विकासक मूल मंत्र छी
प्रजातंत्रक यएह बुनियाद।।

काम करै जँ जनहितकारी
लाभ दइ सभ जनतामे सम।
दियौ चाबस्सी सदनक बाहर
बढ़ा विपक्षी मानवता धरम।।
❑

मैथिली साहित्यमे श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' आइक रचनाकारक रूपमे जानल जाइ छैथ। आजुक परिवेशमे जिनगी, सबहक लेल बेसी महत् रखिते अछि मुदा ऐ बिन्दुपर कियो ठमकल छी, कियो अतितमे छी आ कियो कखनो अतितमे तँ कखनो भविष्यमे...। मुदा छी तँ सभ मिथिले-मैथिलीक लेल, जइमे 'झारूदारजी' सेहो छैथ। आ से सोझे छेबे नहि करैथ अपितु प्रगतिशील जीवन-शैलीमे जीबैत प्रगतिशील विचारक रचनाकार छैथ। **-प्रकाशक**



रामदेव प्रसाद मण्डल

'झारूदार'

जन्मभूमि : गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

जन्म तिथि : 13 जुलाई 1967

पिताक नाओं : स्व. झोटन मण्डल।

माताक नाओं : स्व. सरतैन देवी।

मातृक : गाम- गड़बा, पोस्ट- सांगी, भाया- घोघरडीहा, जिला- मधुबनी।

शिक्षा : मैट्रिक (1984, उच्च विद्यालय- निर्मली।)

जीविकोपार्जन : कृषि एवं निजी अध्यापन कार्य

रूचि : साहित्य लेखन, गायन।

सम्पर्क : गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल, पिन- 847452

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

प्रकाशित कृति : (1) हमरा बिनु जगत सुन्ना छै : (पद्य संग्रह), (2) गीतांजलि झारू (पद्य संग्रह)

पल्लवी प्रकाशन

जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन

निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN 978-93-87675-61-2

9 789387 675612